आतंकवाद की समाप्ति हेतु गांधीय विकल्पों का अध्ययन

राकेश ठाकुर
शोधार्थी
राजनीतिक विज्ञान विभाग
तिलकमाँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर (बिहार)
ईमेलः rakeshraj33061@gmail.com

सारांश

आज हम वैश्विक गतिशीलता के युग में रह रहें हैं। भौगोलिक सीमाओं का कोई अर्थ नहीं रह गया है। सूचना प्रौद्योगिकी ने संपूर्ण विश्व को एक विश्व ग्राम के रूप में बदल दिया है। यही वजह है कि आतंकवाद द्वारा सृजित नाटकीयतापूर्ण कृत्यों को आसानी से वैश्विक दर्शक मिल जाते हैं। आतंकवाद के इस विश्व व्यापी दैत्य से राष्ट्रों, अर्थव्यवस्थाओं, लोकतंत्रों की रक्षा करना अब चुनौती पूर्ण हो गया है। प्रस्तुत शोध–आलेख में आतंकवाद की समाप्ति हेतु गांधीय विकल्पों में अहिंसा, सत्याग्रह, सर्वोदय, स्वदेशी व ग्राम स्वराज्य, ट्रस्टीशिप के माध्यम से आतंकवाद की समस्या का हल निकालने का प्रयास किया गया है।

मूल बिन्दु

सत्याग्रह, सर्वोदय, टस्टीशिप, आतंकवाद, ग्राम स्वराज्य, स्वावलंबन, आत्मनिर्भर।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 09.08.2022
Approved: 16.09.2022

राकेश ठाकुर

आतंकवाद की समाप्ति हेतू गांधीय विकल्पों का अध्ययन

RJPP Apr.22-Sept.22, Vol. XX, No. II,

pp.282-287
Article No. 36

Online available at :
https://anubooks.com/rjpp-2022-vol-xx-no-2

प्रास्तावना

भारत में आतंकवाद की समाप्ति हेतु दो ही विकल्प नजर आते हैं। जहां एक ओर हिंसा का विकल्प अनिवार्य रूप से द्वेश, युद्ध विनाश की ओर ले जा रहा है वहीं दूसरी ओर अहिंसक मार्ग प्रेम, शांति और सबके कल्याण की ओर ले जाने वाला है। इस अहिंसक मार्ग के चुनाव का लक्ष्य शांति का संदेश पेश करना है उस संसार के सामने जो आतंकवाद रूपी अग्नि से छिन्न–भिन्न हो रहा है।

यह सवाल कि क्या गांधीय विकल्प आतंकवाद को रोकने में सफल हो सकते हैं? इसके प्रतिउत्तर में यह कहा जा सकता है कि आतंक रूपी तमाम कार्यवाहियां चाहे वे किसी भी माध्यम से की जाये, उनके विरूद्ध लड़ाई बुनियादी रूप से एक नैतिक लड़ाई ही हो सकती है। वह कानून व व्यवस्था मात्र की ही समस्या नहीं होती। एक बार यदि नैतिक शक्ति को ही जाग्रत कर दिया जाये तो यह समस्या धीरे–धीरे हल की जा सकती है। मानवीय मूल्यों को अपनाते हुये आतंकवाद की समाप्ति का यह अहिंसक तरीका कितना कारगर सिद्ध हो पाता है इसका अध्ययन गांधीय विकल्पों के संदर्भ में आकलन व विश्लेषण के माध्यम से कर सकते हैं। सर्वप्रथम अहिंसा पर नजर डालें तो क्या विरोध का गांधीवादी अहिंसक तरीका काम करता है? हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में मनोविज्ञान विभाग के प्रोस्टीवन पिंकर की पुस्तक 'द बेटर एंजेल्स ऑफ आवर नेचर' मानव के इतिहास में कम होती हिंसा को रेखोंकित करती है। पिंकर ने इसकी पुष्टि करने में पेस्लियान यूनिवर्सिटी के जैकेलिन स्टीवंस के नए अध्ययन का हवाला दिया है। जिसमें हिंसक व अहिंसक आंदोलनों की श्रृंखला पर नजर डाली गयी, केवल पच्चीस प्रतिशत हिंसक व पिचहत्तर प्रतिशत अहिंसक संघर्ष कामयाब हो रहे हैं।[1] इस संबंध में ऑक्सफोर्ड शोध समूह की संस्थापक सेला एल्वर्धी ने आतंकवाद रूपी हिंसा को अहिंसा से खत्म करने के तरीकों की खोज की है जिसमें सबसे महत्वपूर्ण तरीका खुद में बदलाव लाने का है।[2]

एकमात्र वस्तु जो हमें पशु से भिन्न करती है वह है अहिंसा। इसकी साधना से बैरभाव निकल जाता है। बैरभाव के जाने से काम, क्रोध आदि वषत्तियों का निरोध होता है। इससे शरीर निरोगी बनता है। मन में शांति व आनंद का अनुभव होता है। सही व गलत में भेद करने की ताकत आती है। जब भी हम कोई गलत काम कर रहे होते हैं तो हमारे भीतर कुछ ऐसा होता है जो एक बार टोकता जरूर है। हमारे अन्तः करण में आग्रह का भाव जागता है। दया, उदारता का भाव एक बार शरीर के रग रग में बहता जरूर है। यदि हम भीतर की सत्ता से जुड़े रहें तो बाहर की सत्तायें हमसे गलत काम नहीं करवायेंगी। यह जीवन के सही बोध के अभाव से जन्म लेता है। इस समस्या को सेना, पुलिस, कानून की मदद से रोकना पूरी तरह से संभव नहीं है। हमें मानव जाति को जीवन के सही उद्देश्य का बोध कराना होगा। उनके दिलो–दिमाग का शुद्धिकरण जरूरी है। एक बुनियादी जीवन मूल्य के रूप में अहिंसा पर आग्रह एक जरूरी निर्णय है। हिंसा के स्रोत्र हमारी जीवन व्यवस्था में ही बिखरे हुये हैं। यदि व्यक्तियों के आपसी संबंधों में ही अहिंसा नहीं है तो हिंसा के मार्ग से छुटकारा नहीं मिल सकता है। व्यक्ति को अहिंसा की शिक्षा तो देनी ही चाहिये, घर से लेकर विद्यालय, महाविद्यालय तक और विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाओं के माध्यम से भी, लेकिन यह शिक्षा तभी फलीभूत हो सकेगी जब व्यवस्था को भी अहिंसा प्रधान बनाया जाये। राम मनोहर लोहिया ने कहा था कि जब तक धरती पर अन्याय है तब तक आतंक रहेगा। इसका प्रयोग या तो अन्याय आरोपित करने के लिये किया जायेगा या फिर अन्याय का प्रतिकार करने के लिये। लेकिन ''भारत पर आक्रमण करने वाले लुटेरों, चोरों, राष्ट्रों से निपटने के लिये हिंसा का सहारा लेना ही उचित है। लेकिन इसमें

अच्छी तरह कामयाब होने के लिये हमें अपने पर संयम रखना सीखना चाहिये।[3] दुनिया केवल तर्क के सहारे नहीं चलती जीवन में थोड़ी बहुत हिंसा तो है ही। अतः हमें न्यूनतम हिंसा के रास्ते को अपनाना है।[4]

सत्याग्रह ही अहिंसा की कुंजी है। यह वह माध्यम है जिसके बल पर शारीरिक रूप से कमजोर व्यक्ति भी लड़ सकता है। हमारा आदर्श यह होना चाहिए कि विरोधी को प्रेमपूर्वक समझाकर उसके दिलोदिमाग पर असर डालकर उसका हृदय परिवर्तन किया जाये। यदि हम स्वयं को अपने विरोधी की स्थिति में रखकर उसके दृष्टिकोण को समझे तो संसार के अधिकांश दुःख और गलतफहमियां मिट सकती हैं। इसका उद्देश्य विरोध का अंत करना है न कि विरोधी का। मूल बात यह है कि हम सत्य पर अडिग हो, साधन शुद्धि पर हमारा भरोसा हो। सत्याग्रह होना चाहिय समाज को बेहतर बनाने के लिये, स्वयं अपने भीतर के कलुशों को मिटाने के लिये।[5] सत्याग्रह की यह नीति आतंकवाद को रोकने में भी प्रभावी है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है मध्य प्रदेश के पूर्व आत्मसमर्पित दस्यु डाकू बी.के. पंचम सिंह चौहान। उन्हीं के शब्दों में, ''इंसान को परिस्थितियां गलत राह की ओर ले जाती हैं। व्यक्ति अपने को भूलकर गलत मार्ग पर चल पड़ता है लेकिन सही संगत और सीख उसे ईश्वर की राह पर वापस मोड़ सकती है। जब वाल्मिकी जैसे दस्यु के कुछ साधुओं की प्रेरणा से महाकवि और संत बनने के उदाहरण पहले से मौजूद है तो फिर असंभव कुछ नहीं। अब एक ही मकसद है, कोई मेरे जैसे राह न भटके। मिशन के रूप में मैं लोगों को चरित्रवान एवं पवित्र बनने के लिये प्रेरित कर रहा हूं।'' इन्होंने अपने चौदह साल के दस्यु जीवन में सौ लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। 1972 में उन पर दो करोड़ का इनाम घोशित था। जय प्रकाश द्वारा अपील करने पर फांसी की सजा माफ हुयी। इसी दौरान प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के भाईयों बहनों ने सरकार से अनुमति लेकर पांच सौ पचास डाकुओं को तीन वर्ष तक खुली जेल म आध्यात्मिक अभ्यास कराया।[6]

जिंदगी संवारने की एक ऐसी ही कोशिश मणिपुर की युवा लेखिका बीना लक्ष्मी कर रही है। संयुक्त राष्ट्र के दस्तावेज 'ट्रेफिकिंग इन स्मॉल आर्म्स एंड सेंसेटिव टेक्नोलॉजीज' के प्रकाशन के बाद उठा उनका पहला कदम जिसने यह समझाया कि छोटे हथियार ही स्थानीय अशांति का मुख्य स्रोत बने हुये हैं। बंदूक जैसे छोटे हथियार जो तस्करी व कालाबाजारी की सहायता से युवाओं के हाथों में आ रहे हैं, उन पर रोक लगाकर लोगों की आतंकी कृत्यों में लिप्तता पर रोक लगायी जा सकती है। उनका प्रमुख लक्ष्य है कि लोग किसी भी कीमत पर हथियारों की तस्करी या खरीद फरोख्त के रोजगार में शामिल न हो।[7]

25 जनवरी 2012 को अठारह सौ पचपन उग्रवादियों ने तत्कालीन गृहमंत्री चिदंबरम के सामने गुवाहाटी में समाज की मुख्य धारा में जुड़ने के लिये समर्पण कर दिया। इन संगठनों के साथ सरकार ने युद्ध विराम संधि 127 की थी। हमारी पहल यह होनी चाहिये कि सबको सपने देखने का अधिकार है। उनके दुःखों में हम उनके सहभागी बने।

सर्वोदय का अर्थ है आदर्श समाज व्यवस्था। सबका उदय, सबका उत्कर्ष। बिना किसी भेदभाव के सबके विकास की कामना। इसमें राजा रंक, हिंदू मुसलमान, छूत अछूत, संत पानी सबके लिये स्थान है। इसकी नीति है समन्वय। दुनियाँ में शांति तब तक नहीं बनी रह सकती जब तक साठ प्रतिशत गरीब लोगों की जरूरत विश्व की आय के सिर्फ छः प्रतिशत से पूरी होती हो।

पूर्ण से पूर्ण संसार में भी असमानताओं से नहीं बचा जा सकता है। दुनियां में ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके पास वह चीज नहीं है हालांकि वे उसे चाहते हैं। अगर भूखे और अभावग्रस्त लोगों को हम कहीं उसी चीज के साथ मिल जाये तो वे न केवल हमारे साथ उसे बांट लेना चाहेंगे बल्कि उसे हमसे छीन लेना चाहेंगे। वे लोग अगर उस वस्तु को चाहते हैं और छीन लेने पर उतारू है तो इसलिए नहीं कि उनके मन में हमारे प्रति कोई द्वेश है बल्कि इसलिए कि उनकी जरूरत हमारी जरूरत से बड़ी है। इसमें दोश कहीं न कहीं बुनियाद में ही है। यहां प्रश्न राज्य का नहीं स्वयं का है, किसी वर्ग या समुदाय के स्वयं का नहीं बल्कि सर्व के 'स्व' का है। जिसमें जब देश के बारे में बात की जाये तो समाज के अंतिम छोर पर खड़ा व्यक्ति भी ओझल न हो पाये। सबको समान महत्व मिले।[8] सर्वधर्मसमभाव अर्थात् सभी धर्मों को समान मानकर उनमें जो भी अच्छी बातें हैं वे ग्रहण कर ली जाये। भारत में जन्मे लोग चाहे वे किसी भी धर्म, संप्रदाय के क्यों न हो, राष्ट्रीयता के आधार पर भारतीय हैं। यह अत्यंत आवश्यक है कि भारत में धर्म से उत्पन्न आतंक को समाप्त करने के लिये यह कोशिश की जाये कि यहां की सामान्य जनता का जीवन स्तर उन्नत हो, रोजगार के साधन स्थायी एवं परिपूर्ण हो।

'वृक्ष का अंकुर जिस प्रकार झुक जाता है, वृक्ष भी उसी प्रकार झुक जाता है। ठीक इसी प्रकार शिक्षा जिधर मानव मन को मोड़ती है मानव उधर ही मुड़ जाता है।[9] इस दृष्टि से शिक्षा शास्त्र वस्तुतः व्यक्तित्व निर्माण का ही विज्ञान है। जिससे मानव व्यक्तित्व के अन्तर्निहित आध्यात्मिक, बौद्धिक, भौतिक सभी गुणों का विकास हो सके। शिक्षा का उद्देश्य साक्षर होना नहीं बल्कि आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति का जरिया होना चाहिए। बालक को किसी एक न एक व्यवसाय में इतनी दक्षता प्रदान करा दी जाये कि वह आत्मनिर्भर हो सके। शिक्षा जब तक व्यावहारिक नहीं होगी तब तक अधूरी रहेगी। उद्योग को शिक्षण का एक साधन नहीं बल्कि उसका अविभाज्य अंग स्वीकार किया जाये तो देश में बढ़ रही बेकारी की समस्या का समाधान हो सकता है।[10]

कोठारी आयोग के अनुसार भी हम चाहे कला और काव्य की सुशमाओं का ज्ञान प्रापत करना चाहे या विज्ञान के आश्चर्यजनक आविष्कारों को समझना चाहें या फिर किसी कला कौशल में पूर्ण दक्षता ही प्राप्त करना क्यों न चाहें हमें कर्म केंद्रित करना होगा।[11]

पाकिस्तान नाभिकीय वैज्ञानिक परवेज हुद्रभाय के अनुसार वहां तालीम के जरिये ही बच्चों को आतंक की ओर धकेला जा रहा है। ए फॉर अल्लाह, बी फॉर बंदूक, एच फॉर हिजाब, जे फॉर जिहाद, टी फॉर टकराओ, के एच फॉर खंजर जैसे कट्टरपंथी और भारत विरोधी विचार उनके दिमाग में भरकर आतंकवाद की जड़ें मजबूत की जा रही हैं। हिंदू मुस्लिम मतभेद, पाकिस्तान के खिलाफ भारत के मंसूबों, शहादत तथा जिहाद पर व्याख्यान उनके पाठ्यक्रम का हिस्सा है।[12] इसलिए शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश हो। क्योंकि शिक्षा का अर्थ बालक तथा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क तथा आत्मा में पाये जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चहुंमुखी विकास करना हो। 'प्रेम ज्ञान के ग्रंथ को खोलने से नहीं बल्कि हृदय ग्रंथि को खोलने से होता है।'

स्वराज्य में स्व व राज्य दो शब्दों का योग है जिसका अर्थ है अपने ऊपर शासन करना। इसमें सरकार एक हास्यास्पद चीज बन जायेगी अगर जीवन की हर छोटी बात के नियमन के लिये लोग उसकी ओर देखने लगेंगे। इसमें हर गांव का नियमन व्यक्ति स्वयं करे। जिसमें अपनी जरूरतों के लिए पड़ौसी पर भी निर्भरता न हो, अधिक से अधिक व्यक्ति स्वावलंबन के आधार पर कार्य करे,

सभी आत्मनिर्भर हो, लेकिन बहुतेरी जरूरतों के लिये परस्पर सहयोग से कार्य करे। ऐसी ग्राम स्वराज्य की कल्पना भारत के गांवों में स्पष्टतया परिलक्षित होती है।

ऐसा ही प्रयास आंध्र प्रदेश में 1936 में जन्मे डॉ. गुड्डा मुनिरत्नम ने ग्रामसेवा को अपना मिशन बनाते हुये किया है। गांव में रहने वाले ग्रामीण समाज, गरीबों की विभिन्न समस्याओं का निदान गांधीवादी तरीकों स करना शुरू किया। इसके लिए राष्ट्रीय सेवा समिति नामक संस्था स्थापित की। स्वदेशी व ग्राम स्वराज्य के सिद्धान्त को अमल में लाते हुये लघु कुटीर उद्योगों की स्थापना कर ग्रामीणों को आत्मनिर्भर बनाने में मदद करना उनका मकसद रहा। वह अनेक समाजसेवी संस्थाओं के साथ मिलकर भी काम करते रहे हैं।[13] शांति सेना भी इस बदलाव में सहायक सिद्ध हो सकती है। यदि प्रयास स्थानीय स्तर से, अपने घर, मोहल्ले, गांव से ही शुरूआत की जाये। अलखनंदा सिंह जैसे शख्स की पहचान एक नक्सली के रूप में होती थी। आज से वे नंदा महोदय के नाम से जाने जाते हैं। बिहार के गया जिले के नक्सली प्रभावित क्षेत्र बाराचट्टी के डुमरी और आसपास के क्षेत्र में नंदा गरीब बच्चों को कई सालों से निशुल्क शिक्षा दे रहे हैं। वे इन बच्चों की जरूरत का सामान सप्ताह में एक बार गांव में घूमकर चंदा इकट्ठा करके लाते हैं। जहानाबाद का यह युवक कभी नक्सलियों के दस्ते का महत्वपूर्ण सदस्य हुआ करता था।[14]

ट्रस्टीशिप उन सिद्धान्तों में से है जिन पर सर्वाधिक विरोधाभास है। यह सिद्धान्त आध्यात्मिकता का प्रतीक है जिसका आधार अपरिग्रह वृत्ति है। यह संचय की मनोवृत्ति को ही बदलने का सिद्धान्त है जो स्वैच्छिक आधारों पर साधनों के समाज में न्यायसंगत वितरण को सुनिश्चित करना चाहता है। यह इस बात पर आधारित है कि जिसके पास धन है, वह उसे अपना समझकर फिजूलखर्च न करे, थाती समझकर रखे और जनकल्याण में खर्च करे। आर्थिक समानता की जड़ में धनिक का ट्रस्टीपन निहित है। वर्तमान में बदली हुयी परिस्थितियों में इसका व्यापक स्तर पर सफल प्रयोग नहीं हो सकता है क्योंकि सबके सोचने का तरीका जमनालाल बजाज और बिलगेट्स जैसा नहीं हो सकता है। स्वयं गांधी के शब्दों में, ''ट्रस्टीशिप तो एक कल्पना मात्र है व्यवहार में उसका कोई अस्तित्व दिखाई नहीं पड़ता। लेकिन यदि लोग इस पर विचार करे और उसे आचरण में उतारने की कोशिश भी करते रहे तो मनुष्य जाति के जीवन की नियामक शक्ति के रूप में प्रेम आज जितना प्रभावशाली दिखाई देता है उससे कहीं अधिक दिखाई पड़ेगा। पूर्ण ट्रस्टीशिप तो युक्लिड की बिंदु की व्याख्या की एक कल्पना ही है और उतनी ही अप्राप्य भी है। लेकिन यदि उसके लिये कोशिश की जाये तो दुनियां में समानता की स्थापना की दिशा में हम दूसरे किसी उपाय से ज्यादा दूर तक जा सकेंगे।[15] लेकिन धनिक ही नहीं श्रमिक भी स्वयं को अपने श्रम का ट्रस्टी माने। गरीब आदमी भी अपनी रोटी कमाता है तो उस रोटी पर नहीं वरन् भूख पर उसका अधिकार है। यदि कोई पड़ौसी भूखा है तो उसे रोटी बांटकर खाना चाहिए, यही ट्रस्टीशिप का आदर्श है। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके पास कोई न कोई शक्ति न हो। जितनी शक्तियां है उन सबका मनुष्य केवल ट्रस्टी बने। प्रत्येक व्यक्ति ऐसा समझेगा तब समाज में सर्वोदय की व्यवस्था होगी। झारखंड के नक्सल प्रभावित इलाके का गांव है पिठौरिया। यहां रहने वालों का प्रमुख पेशा खेती है लेकिन छत्तीस साल से गांव वाले दसवीं तक का एक विद्यालय चला रहे हैं। 1977 के दौरान अच्छे विद्यालय की कमी को समझते हुये उसका हल खुद ही ढूंढ़ा।[16]

निष्कर्ष

यह बदलाव स्थानीय स्तर की मेहनत का ही नतीजा है। यदि जमीनी स्तर पर ही सुधार नहीं होंगे तो शीर्ष स्तर पर गठित संस्थायें भी बेहतर प्रबंधन नहीं कर पायेंगी। यह पहल नागरिकों को ही करनी है। प्रशासन के साथ–साथ जन जागृति को सच्ची भागीदारी में बदलने की आवश्यकता है। लोग हिंसा के बजाय बेहतर जीवन स्तर चाहते हैं, शांति चाहते हैं और यह शांति उन्हें अहिंसक मार्ग के चुनाव से ही मिल सकती है। यद्यपि इसकी सार्थकता तब ही है जब संपूर्ण जनता इसे अपनाये।

संदर्भ

1. (2012). सही है गांधी का रास्ता. राजस्थान पत्रिका. 2 जनवरी. पृष्ठ **21.**
2. अहिंसा के लिए गुस्से पर काबू करना जरूरी, दैनिक भास्कर, 11 दिसंबर 2012, पष्ठ 6
3. गांधी, महात्मा. (1924). यंग इंडिया. 29 मई. पृष्ठ **176.**
4. गांधी, महात्मा. (1934). हरिजन. 28 सितंबर. पृष्ठ **259.**
5. शुक्ला, पुनीत. (2008). गांधी विचार आज भी प्रासंगिक हैं. 2 अक्टूबर.
6. (2011). दस्यु अब बता रहे हैं गीता के रहस्य. *दैनिक भास्कर.* 5 सितंबर. पृष्ठ **2.**
7. (2012). संगीन के साये में जिंदगी संवारने की कोशिश. *राजस्थान पत्रिका.* 22 जनवरी. पृष्ठ **1.**
8. गांधी, महात्मा. सर्वोदय।
9. सिंह, डॉ. रामजी. गांधी दर्शन मीमांसा. पृष्ठ **253.**
10. गांधी, महात्मा. (1937). हरिजन. 11 सितंबर.
11. राधा कृष्णन कमीशन रिपोर्ट. भाग 1. पृष्ठ **42.**
12. (2012). पाक के स्कूलों में ए फॉर अल्लाह. बी फॉर बंदूक. *दैनिक भास्कर.* 25 जून. पृष्ठ **1.**
13. (2012). गांधी के रास्ते पर... . *राजस्थान पत्रिका.* 5 फरवरी.
14. (2012). बंदूक छोड़कर थामी निःशुल्क शिक्षा की राह. *राजस्थान पत्रिका.* 4 मार्च. पृष्ठ **1.**
15. स्टडीज इन गांधीज्म. पृष्ठ **201.**
16. (2013). किसानों का जुनूनः खेती की कमाई स्कूल में लगा देते हैं. *दैनिक भास्कर.* 24 फरवरी।